www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आदर्श निष्ठा-हमारे अतीत की गरिमा

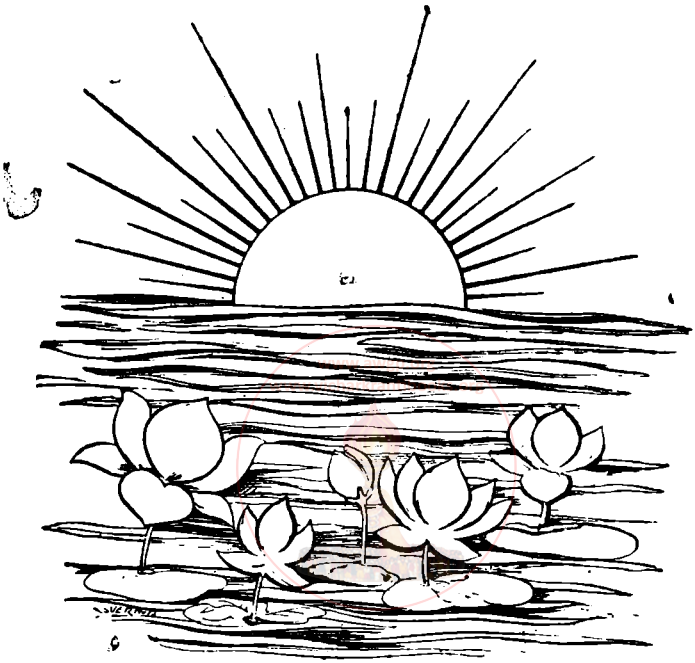

श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN

SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आदर्श निष्ठा—हमारे अतीत की गरिमा

भारत किसी समय उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँचा हुआ था। उसकी अपनी सीमाओं में सुख-शान्ति के भाण्डागार भरे पड़े थे। भौतिक साधनों की कमी न थी। शारीरिक बलिष्ठता और दीर्घजीवन का भरपूर आनन्द सबको उपलब्ध था। परिवार एक छोटे राष्ट्र के रूप में विकसित होते हुए—विकासमान पुष्प-पादपों से भरे हुए उद्यान की तरह शोभायमान थे। धन सम्पदा की कमी न थी। अन्न के भण्डार भरे पड़े थे और दूध, घी की नदियां बहती थीं। सोना-चाँदी जैसी बहुमूल्य धातुएँ घरेलू बर्तनों के रूप में प्रयुक्त होतीं थी। सामाजिक सुव्यवस्था पारस्परिक सघन सदभाव सहयोग की समुन्नत स्थिति में जा पहुँची थी। शालीनता और सज्जनता को हर व्यक्ति ने आवश्यक वस्त्रों की तरह धारण कर रखा था। राजा लोग गर्व करते थे कि उनके राज्य में कोई चोर, अपराधी, कुकर्मी नर-नारी नहीं है।

उन सतयुगी परिस्थितियों में यह देश अपनी प्रगति, समृद्धि और सुख-शान्ति को अपनी ही सीमा तक सीमित रखने वाला न था, उसने उसे दोनों हाथों से समस्त संसार में बखेरा। समृद्धि का सदुपयोग है भी इसीमें कि उसका लाभ अपने शरीर, परिवार तक सीमित न रहे और उसका लाभ प्रकाश दीप की तरह सुदूर क्षेत्रों को आलोकित करता रहें।

भारतवासी कुछ पाने, कमाने के लालच से नहीं, वरन् अपने उपार्जन से समस्त संसार को लाभान्वित करने के लिए सुदूर देशों में गये और धरती के कोने-कोने को संस्कृति और समृद्धि का अजस्र अनुदान देकर ऊँचा उठाया। इन प्रयासों के प्रमाणों से इतिहास के पृष्ठ स्वर्णाक्षरों में लिखे हुए परिस्थितियों में रहने वाले लोगों ने भारतवासियों से अपरिमित अनुदान पाये और सर्वतोमुखी प्रगति की दिशा में बढ़ चलने का पथ-प्रशस्त किया। यही रही है प्राचीन काल के भारत की विश्व सेवा साधना की पृष्ठभूमि, जिससे वह स्वयं गौरवान्वित हुआ और समस्त संसार को कृतकृत्य बनाया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोगों द्वारा आदर्शवादिता की बात करने और बड़े-बड़े तर्क देने के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द ने एक बार कहा था—'तुम आदर्शों की बात करो और उसे व्यवहार में न उतारो तो तुमसे चोर डाकू और लुटेरे अच्छे हैं क्योंकि उनके जीवन में कथनी और करनी का अन्तर तो नहीं रहता।' इस उक्ति के सन्दर्भ में आज भी जाना जाय तो यह शत प्रतिशत सही सिद्ध होगी। लोग आदर्शों तथा सिद्धान्तों का चिल्लाकर समर्थन करते है पर अपने सामान्य जीवन में उन आदर्शों को कहीं छूते तक नहीं।

आदर्शवादिता की प्रवंचना करने वाले लोगों की कमी नहीं है। बल्कि कहा जाना चाहिए अधिक है। उदाहरण के लिए आज के समय में दहेज प्रथा का विरोध करने वालों को ही लिया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति यह अनुभव करता है कि इस प्रथा का अन्त किया जाना चाहिए, मानता और कहता भी है। पर कितने लोग हैं जो इस कथनी को करनी में भी निभाते हैं। जब अवसर आता है तो मजबूरी कहकर या दूसरे पक्ष का दबाव बताकर अपने बचाव का रास्ता खोजते हैं। कन्या के सम्बन्ध में तो मजबूरी किसी प्रकार समझ भी आती है पर पुत्र के विवाह में क्या मजबूरी आ जाती है। उस समय लोग कह देते हैं कि उसकी माँ ने दबाव डाला था या घर के अन्य दूसरे सदस्य ने मजबूरी उत्पन्न कर दी थी।

जो भी हो यह है प्रवंचनापूर्ण और न केवल दहेज के सम्बन्ध में वरन् व्यक्तिगत दोष दुर्गुणों से लेकर सामाजिक कुरीतियों तक के आगे घुटने टेक देने में यह दोहरी नीति आदर्श और व्यवहार के बीच में खाई उत्पन्न कर देती है। उस तरह जैसे कहने की बात कोई दूसरी होती है और करने की दूसरी। जबकि आदर्श होते ही जीवन में उतारने के लिए हैं। कहा जा सकता है उनकी प्रतिष्ठा ही जीवन जीनेके एक ढंग की तरह होती है। उनमें ही जीवन की सार्थकता खोजी जाती है। और वे व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन को सुख शांति सम्पन्न बनाने के लिए ही स्थापित किये जाते हैं।

लेकिन हम उनकी प्रवंचना इसलिए करते हैं कि हम समझते हैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आदर्श जीवन को बोझिल और क्लान्त बनाते हैं। जीवन को खुशहाल बनाने के लिए हम आदर्शों को एक कोने में डाल कर उस पुण्य धाम में कूड़ा कबाड़ा इकट्ठा करते रहते हैं। सत्य, न्याय, त्याग, प्रेम, पवित्रता, उदारता, सहिष्णुता, करुणा, क्षमा जैसे आदर्शों से जीवन उदात्त और आनन्द पूर्ण बनता है। इन आदर्शों को अपनाने वाला व्यक्ति अपनी चेतना में आनन्द और शांति की ऐसी धारा प्रवाहित करता है जिसमें नहा कर अन्य लोग भी प्रफुल्लित हो उठते हैं। इनके विपरीत असत्य, अन्याय, स्वार्थ, रुक्षता, मलीनता, कृपणता, आवेश क्रूरता और प्रतिहिंसा की भावनायें न जागने जीने देती हैं और न सोते चैन लेने देती हैं।

आदर्शों के लिए हमारे मनीषियों ने एक अनूठा शब्द खोजा है—जीवन मूल्य अर्थात् जीवन ही जिसका मूल्य है। उनके महत्व की कल्पना या तुलना इससे कम में की ही नहीं जा सकती। मनुष्य को सबसे बढ़कर जीवन ही प्रिय है। चाहे करोड़ों रुपया हो पर जीवन संकट में पड़ा हो तो उसे बचाने के लिए सारी सम्पत्ति भी खोने को आदमी तैयार हो जाता है। धन सम्पत्ति ही नहीं, विद्या, अधिकार ज्ञान, परिवार, पत्नी, बच्चे, समाज, सब कुछ जीवन की तुलना में गौण लगता है। और यह विस्मय विमुग्ध कर देने वाली बात है कि जिस जीवन की तुलना में सब कुछ तुच्छ है वह जीवन आदर्शों के लिए बलि चढ़ा देना श्लाघनीय समझा गया है। यही है हमारी संस्कृति की धरोहर आदर्शों की पराकाष्ठा।

भारतीय संस्कृति के इतिहास का पन्ना पन्ना इस प्रकार के उदाहरणों से भरा पड़ा है। जिन लोगों ने जीवन के लिए की जाने वाली कुर्बानियों को आदर्शों के लिए कर दिया उन्हें भी भारतीय-धर्म ने अवतार कह कर सम्मानित किया। भगवान राम ने अपने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए राजमहल में उपलब्ध होने वाली सुख सुविधाओं का त्याग किया और जंगल में वनवासी बनकर रहे। लक्ष्मण ने अपने भाई के प्रति कर्तव्य पालन के लिए तमाम सुख सुविधाओं को छोड़ दिया। भ्रातृ प्रेम का इतना अनूठा उदाहरण संसार में कहीं नहीं मिलेगा। राम का सारा जीवन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो आदर्शों के पालन के लिए त्याग और उत्सर्ग का है। दुराचारी रावण का अन्त करने के लिए एकाकी रहते हुए भी उन्होंने कितना बड़ा खतरा मोल ले लिया था।

राम को तो हम भगवान मानते हैं और समझते हैं कि उनका जन्म ही इन आदर्शों की प्रतिष्ठा के लिए हुआ था। भगवान होने के कारण उनके अनुकरण को हम अपनी सामर्थ्य से बाहर का भी समझें तो श्रवणकुमार जैसे छोटे से बालक का उदाहरण सामने है। जिसने अपने माता-पिता की अकांक्षा पूरी करने के लिए उन्हें पूरे भारत में कन्धे पर रखकर घुमाया।

अपने मनोविकारों पर विजय प्राप्त करने के भी अनूठे उदाहरण भारतीय इतिहास में मिलते हैं। किसी लेखक ने कामोद्दीप्त वातावरण में शुक की अचलता का चित्र इस प्रकार खींचा है—'वसन्त ऋतु अपना सारा उन्माद और वैभव वहाँ फैला देती है। कोकिल उत्कट प्रेम भावना से कुहू कुहू करती है। फूलों से खुशबू निकल रही है। प्रसन्न हवा बह रही है। नये पल्लव और कोंपले फूटी हुई हैं। मानो सारा वातावरण मादक हो रहा है और वहां अप्रतिम सुन्दरी रम्भा अनेकों विलासी हाव भाव बनाती हुई खड़ी है। उसके वस्त्र हवा के झोंकों में उड़ रहे हैं, जैसे सारी सृष्टि आसमान तक सुन्दरता से ओत प्रोत हो रही है। रम्भा शुक को आलिंगन भी करती है पर शुक का एक रोम भी खड़ा नहीं होता।'

शिवजी द्वारा लूट में लायी गयी स्त्री को यह कहकर सादर वापस भेज देना कि काश मेरी माँ भी इतनी सुन्दर होती तो मैं भी सुन्दर होता।' छत्रसाल से प्रणय प्रस्ताव करने वाली युवती को यह जवाब मिलना कि—पता नहीं मुझ सा सुन्दर पुत्र जन्म ले या न ले तो तुम मुझे ही अपना पुत्र क्यों नहीं मान लेतीं। ऐसे उदाहरण अब कहीं देखने को नहीं मिल सकते।

सत्य के लिए अपना सारा जीवन होम देने वाले राजा हरिचन्द्र तब तक अमर रहेंगे जब तक लोगों को सत्य का नाम भी याद रहेगा। कहा जाता है कि वे केवल स्वप्न में ही अपना राजपाट दे बैठे थे और जागने पर भी —उसका पालन अन्तिम क्षण तक किया। दान के बाद दक्षिणा माँगी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो हरिश्चन्द्र खजाने से देने लगे पर याचक ने यह कहकर रोक दिया कि राजपाट और कोषको तो तुम मुझे दान कर चुके। अब वहाँ तुम्हारा क्या रहा। हरिश्चन्द्र को जैसे अपनी भूल का ज्ञान हुआ और उन्होंने श्मसान में नौकरी कर दक्षिणा चुकायी परीक्षा ने वहाँ भी पीछा नहीं छोड़ा और पुत्र की मृत्यु का दारुण दृश्य अपनी आँखों के समाने देखकर उनका हृदय दहल उठा होगा। पर कर्तव्य यहाँ भी विस्मृत नहीं हुआ। जब तक उनकी पत्नी ने मुर्दे जलानेका कर चुका नहीं दिया तब तक उन्होंने शव को यों ही पड़ा रहने दिया।

महारथी कर्ण और राजा बलि ने दान धर्म की पराकाष्ठा तक उसके आदर्श का स्पर्श किया। कर्ण जानते थे कि कवच कुण्डल देने से वे मर भी सकते हैं। पर इन्द्र जब याचक बनकर सामने खड़े हों और इन्द्र ही क्यों न हो देने का व्रत लेकर 'ना' कहना सीखे ही नहीं थे। कर्ण के पिता सूर्य ने जब इस षड्यन्त्र का भंडाफोड़ करते हुए कर्ण को सचेत किया तो उनका यही उत्तर था—मैं भी व्यावहारिकता का पालन कर रहा हूँ। आप जिसे व्यावहारिकता कह रहे है उसका अर्थ है थोड़ी चीज दे कर अधिक प्राप्त करना। यह नश्वर शरीर तो एक दिन नष्ट होगा ही। आज हो या कल—क्या फर्क पड़ता है और मैं इसके बदले अमर कीर्ति आदर्श की पराकाष्ठा पास कर रहा हूँ तो क्या घाटे की बात है। वामन ने तीन पग जमीन माँगी थी और बलि द्वारा वह दिये जाने पर उन्होंने दो पग में सारा ससार भूलोक अन्तरिक्ष नाप लिया। अब तीसरा पैर कहाँ रखे तो बलि ने अपना सिर आगे कर दिया और बामन ने बलि के सिर पर पैर रखकर उन्हें पाताल में पहुँचा दिया।

नियम और अनुशासन की मर्यादा कायम करने के लिए राजा हंसध्वज ने अपने पुत्र को भी नहीं छोड़ा। जब स्वतन्त्रता की रक्षाका प्रश्न उठा तो उन्होंने राज्य के हर युवा व्यक्ति को समर में जानेकी आज्ञा करदी। सब लोग तो युद्ध में चले गये पर पता चला कि उनका पुत्र सुधन्वा अपनी पत्नी के साथ प्रणय लीला में मग्न है। राजपुत्र होने के साथ-साथ सुधन्वा नवि-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाहित भी थे । हंस ध्वज चाहते तो पुत्र को क्षमा कर सकते थे । पर कर्तव्य नियम सो नियम राजाज्ञा का उल्लघन करने वालों को जो दण्ड दिया जाता था वही उन्होंने अपने पुत्र को भी दिया । उस समय अनुशास भङ्ग करने वालों को गरम तेलमें डाल देने का दंड था । सो सुधन्वा को भी यही दंड मिला ।

शरणागत की रक्षा हमारे देश की अमूल्य धरोहर रही है । राजा शिवि को अपनी शरण आये पक्षी की रक्षा के लिए उसका शिकार कर रहे बाज को जांघ का मांस काट कर देना पड़ा । मयूर ध्वज ने अपने पुत्र का मांस खिला कर अभ्यागत की इच्छा पूरी की इस तरह के प्रसगों में वैचित्र्य के साथ-साथ अस्वाभाविकता है । पर जिन लोगों ने मृत्यु के आर पार देखा है उनके लिए कुछ भी विचित्र नहीं है, जो भी कुछ है सो व्यावहारिक है । जब जीवन क्षणभंगुर है, और एक न एक दिन शरीर को मिटना है तो क्यों न आदर्शों के लिए ही मरें । नियतिगत मरण की अपेक्षा सोद्देश्य मृत्यु का नाम ही तो उत्सर्ग है । और जब बिना कुछ गंवाये उत्सर्ग का श्रेय मिल रहा हो तो क्यों न लिया जाय ।

मृत्यु का रहस्य समझने वालों के लिए उत्सर्ग उसी प्रकार है जिस प्रकार सामान्य आदमी लाख रुपये की आशा में एक रुपये का लॉटरी टिकट खरीद लेता है । लॉटरी में तो लखपति बनने की सम्भावना नहीं के बराबर है पर आदर्शों के लिए उत्सर्ग करने वाला अपने प्राप्तव्य के सम्बन्ध में शत प्रतिशत निश्चित रहता है । और निश्चिन्तता की सम्भावना धूमिल पड़ती भी नहीं । सिडनी जैसेलड़ते-लड़ते मरजाने वाले उन सैनिकों को आज कौन याद करता जिन्होंने अपने सामने आया पानी बूसरे प्यासे के पास भिजवा दिया । और अन्तिम समय में उभर कर आयी करुणा ने ही उन्हें अमर बना दिया ।

भारतीय इतिहासका एक-एक अध्याय उज्ज्वल आदर्शों से भरा पड़ा है । अशोक ने कहीं अपने शिला लेखों में लिखवाया है कि यदि रात्रि दिन की एक चौथाई रहती तो अच्छा था ताकि में और अधिक लोगों का दुख

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दर्द सुनता और दूर करता। राजा हर्ष प्रति पाँचवें वर्ष अपना सारा कोष जन कल्याण के लिए खर्च कर दिया करते थे। प्रताप चाहते तो अकबर की केवल अधीनता स्वीकार कर निर्बाध राजमहलों में सुख भोग कर सकते थे। पर स्वतंत्रता प्रेमी इस वीर ने जङ्गलों में रहकर कंद मूल खाना बेहतर समझा अपेक्षा केवल मौखिक रूप से ही अकबर को अपना संरक्षक मान लेने के।

पर द्रव्येषु लोष्टवत्' की आदर्श मर्यादा भी यहाँ जैसी अन्यत्र दुर्लभ है। तेज भूख लगने के कारण दादाजी कोण्ड देव ने एक बार किसी बगीचे से फल तोड़ लिया था, पर अपने व्रत की जब याद आयी तो पश्चताप स्वरूप उन्होंने अपने हाथ ही कटवा डाले। इस युग में भी एक से एक त्यागी और आदर्श निष्ठ व्यक्ति हुए है। महात्मागांधी, स्वामी दयानंद, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, महर्षि देवेन्द्रठाकुर, स्वामीश्रद्धानंद, रविशंकर महाराज, रवीन्द्रनाथ टैगोर, निराला, प्रेम चन्द, माखन लाल चतुर्वेदी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, तिलक, गोखले, महामना मालवीय, सुभाष चन्द्र बोस, सरदार पटेल, श्री प्रकाश, लाल लाजपतराय, सम्पूर्णानंद, सरोजिनी नायडू, डा० राजेन्द्र प्रसाद, राज गोपालाचार्य, डा० राधाकृष्णन, मौलाना आजाद, सरसैयद अहमद खाँ, मीरावेन, जवाहर लाल नेहरू आदि अगणित नाम हैं।

स्मरणीय और ध्यातव्य है कि आदर्श निष्ठा हमारी साँस्कृतिक धरोहर है। हम भी उसी ऋषि परम्परा की संतान हैं तथा यह हमारे लिए नितांत अशोभनीय है कि आदर्शों के साथ प्रवंचना करें आदर्शों की प्रवंचना अपने आपको छलने के सिवा और कुछ नहीं है। इस छलना से बचने के लिए आदर्शों का अनुसरण और व्यवहार में उतारने की दृढ़ता बरतकर ही हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित रख सकते हैं। अन्यथा अपना जीवन बर्बाद करने के साथ साथ अमूल्य सास्कृतिक धरोहर के नष्ट होने का खतरा समुपस्थित है।

क्र०-२११/प्र०-युग निर्माण योजना, मु० युग निर्माण प्रेस मथुरा, मूल्य ४०पैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org